International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 6, June 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारतीय राजनीतिक दर्शन की उत्पत्ति लेखन और ऐतिहासिक कारणों का समालोचनात्मक मूल्यांकन

कैलाश चन्द्र रोत – शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, गोविन्द गुरू जनजातीय विश्वविद्यालय, बांसवाड़ा (राज.) Email : kailashroat86@gmail.com

पाश्चात्य विद्वानों द्वारा इस धारणा को पुष्ट किया है कि प्राचीन काल में भारतीयों की दृष्टि घेय शास्त्र तथा आध्यात्मवाद पर केन्द्रित थी और भारतीय दर्शन में राजनीतिक चिंतन का अभाव था। मेक्समूलर, प्रो. ब्लूम फील्ड और डेमिन जे.जे. द्वारा यह धारणा पुष्ट की थी।भारत का जा साहित्य था खासकर हिंदू साहित्य, जिसमें निहित आदर्श, व्यवहार, रहस्यवाद और पारलौकिक बातों को मुर्खताभरी बाते मानी। इस भ्रमपूर्ण बातों को अंग्रेजों ने हमेशा विकसित किया उन्होंने कभी तटस्था से अध्ययन नहीं किया। भारत के शासकों के रूप में भारत को किसी प्रकार के मौलिक राजनीतिक विवादों के जन्मदाता का श्रेय नहीं देना चाहते थे।

परंतु प्लेटो और अरस्तु के शताब्दी से पूर्व भी भारत में राजनीतिशास्त्र पर पर्याप्त लिखा जा चुका था, भारतीय राजनीतिक दर्शन का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि यहाँ कि सभ्यता, संस्कृति, धर्म और सुदूर कबिलाई आदिवासियों में जन्मा गणतंत्र लोकतंत्र सार्वजनिक व्यवस्था विद्यमान थी। वैदिक साहित्य के वृतांत में कुछ व्यवस्था देखने को मिलती है। राजनीति व्यवस्था एवं विचारों की झलक मिलती है।

अरस्तु के समकालीन कौटिल्य जिसे व्यवहारिक राजनीति का पिता कहाँ जाता है। विचार इस बात के साक्षी है ज्ञान, विज्ञान के क्षेत्र में भारत पीछे नहीं था। भारतीय राजनीतिक दर्शन का अध्ययन का आरंभ मोटे तौर पर 18वीं शताब्दी में हुआ है।19वीं शताब्दी के आरंभ में दर्शन और धर्म के बहुत से प्राचीन ग्रंथों का संस्कृत से अंग्रेजी तथा यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद किया गया।

प्राचीन भारत में राजनीति और दर्शन की प्रकृति

प्राचीन भारत में हमारे अध्ययन विषय को राजधर्म, दंडनीति, अर्थशास्त्र और नीतिशास्त्र आदि के नामों से संबोधित किया जाता था। एक तरह से राजनीति दंडनीति, अर्थशास्त्र एवं राजधर्म में थी।

Key Words – यूनान, सभ्यता, धर्म, दर्शन, पाश्चात्य दर्शन, भारतीय दर्शन, ग्राम नगर साम, दाम, दण्ड तथा भेद, तीन शक्तियाँ (सत्यगुण, रजोगुण तथा तमोगुण), कर्मफल सिद्धांत, त्रिगुण सिद्धांत, आश्रम व्यवस्था आदि ।

वे कारक जो भारतीय राजनीतिक चिंतन के इतिहास को पाश्चात्य से विलग करते है–

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 6,June 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

राज्य संबंधी मौलिक प्रश्नों पर विचार एवं मीमांसा करना ही राजनीतिक चिन्तन है और यह चिंतन उतना ही पुराना है जो स्वयं राज्य, युनान ने राजनीतिक चिन्तन की उत्पत्ति, वहाँ की समस्याओं को और इसका सवाल खोजने के लिए पैदा हुई थी –

1. राज्य की उत्पत्ति– की समस्या
2. राज्य के स्वरूप और इसके आदेश, पालन की समस्या,
3. राज्य में लक्ष्य की समीक्षा –
4. राज्य की आकार की समस्या
5. प्रभुसत्ता सम्बन्धी समस्या
6. सरकार सम्बन्धी समस्या
7. कानून के स्वरूप की समस्या
8. नागरिकता के अधिकार एवं कर्त्तव्यों की समस्या,
9. राज्य के विभिन्न प्रकारों की समस्या,
10. विभिन्न राज्यों का अध्ययन

- राजनीतिक चिन्तन के विकास पर चाहे वह पाश्चात्य हो या, भारतीय – सामाजिक वातावरण राजनीतिक परिस्थिति और, धर्म का प्रभाव पडता है।
- राजनीतिक विचारको ने केवल बौद्धिक स्तर पर ही विचार नहीं किया है। बल्कि अपनी समकालीन परिस्थितियों के निरीक्षण एवं अनुभव के आधार, पर गम्भीर चिन्तन के साथ कुछ सकारात्मक परिणाम निकालें जाते है – परिणाम, परिवर्तनशील परिस्थितियों के निस्तर रूप में प्रभावित होते रहते है – और साथ ही नवीन परिणामों की खोज का जन्म होता है – युनान (ऐथेस) में यही हुआ–
- एथेंस के लोकतंर द्वारा सुकरात को, विषपान का कठोर दण्ड मिला– परिणामस्वरूप शिल्प प्लेटों, को ममोंत आघात पहुँचा

(4) परिणामस्वरूप ही इसके रिपब्लिक ग्रंथ उसने आदर्श राज्य को खोज की, और लोकतंत्र की आलोचना की।

यह बात लगभग– 427–347 (B.C) के समय है। वहाँ इस समय पर लोकंतर कैसा होता चाहिए इस पर बहस होती है – इस समय लगभग भारत में भगवान श्रीराम के काल से भी आगे जाती है – कालक्रम और ऐतिहासिक तके खादेगें तो कुछ हाथ, आए न आए –

लेंस्ली स्टीफेन ने सही कहा–

''वे देश, सौभाग्यशाली है जिनके पास कोई राजनीतिक दर्शन नहीं है। राजदर्शन या तो अभिनव क्रान्ति, की संतान है। या भावी क्रान्ति का द्योतक है –बेकन – ''राजनीतिक चिन्तन भगवान की अर्पित की हुई कुमारी के समान बॉझ है।

(5) दर्शन के चिन्तन से, हमें भूतकालीन बौद्धिक वातावरण का, ज्ञान होता है – अतीत की राजनीतिक घटनाओं और आन्दोंलनों के कारणों तथा परिणामों का पता लगता है, और हम इन

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 6,June 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विचारों को जान पाते है। जैसे –18 वीं शताब्दी की फ्रैंच राज्य–क्रान्ति और 20 वीं सदी की बोल्शेविक क्रान्ति, इसके सुदर उदाहरण है। हम विचारों को जान पाते है। विचारोंको समझेबिना इतिहास का ज्ञान प्राप्त करना बहुत दुश्कर काम है। दर्शन चाहे भारतीय हो या, पाश्चात्य, वर्तमान, इतिहास की घटनाओं और समस्याएँ के समझने से में सहायता मिलती है। वर्तमान समस्याएँ अतीत की परिस्थितियों से उत्पन्न होती है।

यूरोपीय एवं भारतीय दर्शन के कुछ तथ्य

विभिन्न देशों में समय–समय पर राजनीतिक दर्शन और विचारों का उत्पत्ति हुई है। फिर भी राजदर्शन के अध्ययन का आरंभ प्राचीन यूनानी विचारकों से किया जाता है।

यूरोप के अतिरिक्त प्राचीन भारत हुआ मिश्र, चीन, बेबीलोन ईरान, सीरिया आदि देशों, में मी, राजनीतिक विचारों का किसी न किसी रूप में अभ्युदय हुआ है। इन देशों में महान और राजनीतिक संगठन दृष्टि से, समृद्ध इतिहास था,

(6) भारतीय एवं अन्यान्य प्राचीन जातियों के राजनीतिक चिन्तन की जो अवहेलना यूरोपीय लेखकों, ने कि है – इसके कुछ कारण इस तरह से है –

1. पुर्वी दार्शनिकों के विचार युनानी विचारों की भाँति यूरोपीय सभ्यता के अंग नहीं बने।
2. पुर्वी देशों में और वह भी विशेष रूप से भारत में राजनीतिक विचारधाराओं को यूनानियों भाँति स्वतंत्र रू‍प से लेखबद्ध नहीं किया।

प्राचीन भारत में इस तरह का जो महत्वपूर्ण साहित्य या, अधिकांश भाग आज भी प्राप्त नहीं है –

- एक तथ्य और निकलकर आता है वो यूरोप के दर्शन के इतिहास और भारतीय दर्शन के इतिहास की, मध्यकालीन परिस्थिति एक वैसी है, लेकिन प्राचीन, राजदर्शन का केन्द्र बिन्दू नगर–राज्य था, वो सामाजिक, संगठन का सर्वोत्तम एवं पुर्ण रूप समझा जाता है। इस समय राज दर्शन का आचार–प्रधान था, बाद में नगर राज्यों का पतन हुआ– इस, युग का, भी अन्त हुआ। बाद में रोमन–साम्राज्य एवं ईसाई धर्म के, अभ्युदय ने एक नवीन सामारिक व्यवस्था को जन्म दिया –और मध्य युग, का आधार सार्वभौमवाद बना, इस समय की विश्व–राज्य कल्पना की गई – और राजनीतिक चिन्तन का केन्द्र बिंदु आचार न होकर हमें बन गया राज्य एवं चर्च के परस्पर सम्प्रदायों की समस्या इस युग के, विचारको के मन–मानक का मन्थन करती रही। यही इस समय भारत में था।
- मध्यकालीन युग को आधुनिक रूप देने का काम पुर्नजागरण एक सुधार आन्दोलनों ने किया एवं सार्वभौमवाद का स्थान शनैः शनै राष्ट्रीय राज्यों ने ग्रहण किया –

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 6,June 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

- अतः स्वाभाविक है की, मनुष्य ने इस ग्रह पर सचेतन अस्तित्व में आने, के साथ ही विवादित मुद्दों के बारे में, विचार किया– होगा, – पुर्व में, चीनी, राजनीतिक चिन्तन, ग्रीक राजनीतिक चिन्तन एक रोमक, राजनीतिक चिन्तन थे, हम, आज आधुनिक पाश्चात्य राजनीतिक चिन्तन की बात करते है –
- इसी तरह भारतीयों ने भी भारतीय दर्शन विकसित किया सयंम के साथ निजी पहचान बनाई। जब हमारा आग्रह, भारतीय समाज की पृथक, अस्मिता या भारत में चिन्तन परंपराएँ की अलग पहचान पर हो तो इसका अर्थ यही नहीं है कि भारतीय समाज अन्य समाजों से, कटा हुआ है। हम अगर आरम्भिक पुर्व ऐतिहासिक सभ्यताओं जैसे, मिश्र, फ्रांस, एवं चीन की सभ्यताओं का विवेचन कर सकते है। जिनके साथ हमारी, निकट की सादृश्यता रही है –

तदउपरान्त ग्रीक, विभिन्न जनजातियों, फारसी, इरानी एवं अन्य अस्व देशों के लोग अपने साथ अपनी समृद्ध संस्कृति लेकर आए एवं अन्त में, पाश्चात्य सभ्यता आई, जिसके सतत प्रवाहित राष्ट्रीय चेतना की छाया को विभिन्न प्रकार से, समृद्ध बनाया कुछ विशेष प्रकरण में यह प्रभाव जुडे –

भारतीय दर्शन प्रचलित विचारों को नई दिशा देने में निर्णायक सिद्ध हुआ,

बाहर का जो प्रमाण अपने घर में जो हुआ, इसका अर्थ यह नहीं है। हमारे अपने व्यक्तित्व का कोई अस्तित्व नहीं था प्रत्येक समय चाहे वे पश्चिम का हो या पुर्व का, प्रत्येक की अपनी एक व्यवस्था ढाँचा पाया जाता है – पाश्चात्य राजनीतिक चिन्तन का अध्ययन मात्र इसलिए महत्वपूर्ण नहीं है कि वह कुछ सीमा तक हमारे अन्दर गहरा जमा हुआ है।

हालांकि इसलिए महत्वपूर्ण है की एक सदी के लेन–देन के उपरान्त इसकी सृजनात्मकता हमें नए तरिके एवं विकल्प, सुझाती है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है की हमारें विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन के विकास पर बहुत, कम ध्यान दिया जाता है।

हमारे छात्र स्वयं अपने देश की तुलना में रोमं, और इंग्लैंड के बारे में अधिक जानते है जिसका परिणाम यह, होता है कि वे, अपनी स्वयं की चिन्तन परंपराओं से लगभग अनभिज्ञ रहते है – इसी कारण, भारतीय बुद्धिजीवी अपने स्वयं के समाज से अलगाव की, स्थिति में होते है।

(4) यह सही होगा की हम राजनीतिक चिन्तन के संदर्भ में भारतीय सभ्यता के विशिष्ट लक्षणों, को पहचानने के लिए गहन चिन्तन करे। यह विशिष्टता सतही मूलांकन द्वारा नहीं बल्कि गहराई में करना होगा।

भारत की अनूठी भूगोल की स्थिति है जो स्वतंत्र भी है इसकी सामाजिक धार्मिक– संरचना ने इसे एकता में शाकि। दी है हमारी एकता लोगों के सामाजिक–धार्मिक संरचना ने इसे एकता की शक्ति, प्रदान की है यह एकता लोगों के सामाजिक एवं दार्शनिक अनुकूलन में गहराई में आकार ले चुकी है –

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 6,June 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रारम्भ के काल से, ही उनकी सामारिक प्रगति को औचित्य एवं, जीवन क्षमता प्रदान की है –

यह संभव है की हम विश्व, ब्रह्माण्डीय प्रक्रियाओं एवं लोकातीन के बारे में एक साभ बात, कर पाते है भारतीयो भाषा में भिन्नता हो सकती है। किन्तु इनका दृष्टिकोंण, व्याकरण, एवं शब्दावली सारे देश में लगभग समान है –

विशेष : जाति, कर्त्तव्य, सांसारिक प्रक्रिया, दया 'न्याय' अधिकार आदि, अवधारणाऐं, जो, या तो प्रथम : वैदिक, विश्व–सृष्टि पर आधारित है, अथवा अनुकरण द्वारा, इससे उत्पन्न है कि व्याख्या निरूपण में ये भाषाऐं, पूर्णत, सक्षम, है, यह इन सभी के लिए सत्य है जो, या शिव कृष्ण अथवा, ईसा, के उपासक है – क्योंकि इनमे से, प्रत्येक देश के विभिन्न भागों में एक, जैसा पवित्र स्थान रखते है।

- पौराणिक विरासत बहुसंख्य लोगों के बीच सामान्यतः समान है।

(10) हिन्दुत्व एवं इस्लाम के मध्य मतभेद है किन्तु हिन्दुत्व में भक्ति, आंदोलन और इस्लाम में सुफिवाद ने, इनकी समानताओं या बल देकर, एवं विभिन्न संपर्क बिन्दू बनाकर इन मतभेदों को हद करने का प्रयास किया है। ताकि एक साझी पहचान सकट हो सके –

- यह निर्विवाद सच है की, भारतीय सभ्यता हमेशा एक समस्या से दुसरी समस्या तक मिश्रित संस्कृति की खोज में आगे बढती है। यह साधारण सी बात,किन्तु सामान्यीकरण द्वारा हम कह सकते है। अतः हमारी अधिकतर दार्शनिक धारणाएँ, संस्कृत से आती है।
- न्याय, एवं निष्पक्ष आचरण के कई विचार, उर्द, और, फारसी से तथा, कानुनी एवं राजनीतिक शब्द, अग्रेजी, से आते है।
- सर्वविदित है कि भारतीय सभ्यता में, दार्शनिक, एवं सामाजिक एकता राजनीतिक एकता से, काफी पहले, आई थी –
- इस दर्शनिक एकता ने, विभिन्न रिति–रिवाजों, एक सांस्कृतिक व्यवहारों, संरचनाओं, भाषाओं और, सामारिक जीवन में प्रवेश किया –
- विरासत में प्राप्त इस दार्शनिक सामाजिक प्रणाली और, वेस्टमिंस्टर प्रारूप पर आधारित राजनीतिक प्रणाली के आपसी मतभेद, भारत की, एक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक समस्या है।
- अपना मूल, प्रागैतिहासिक काल में है। यद्यपि यह, विभिन्न लोगों, एवं विभिन्न, माध्यमों, द्वारा, सरीका एवं शक्तिशाली बनी रही है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 6,June 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

इस दार्शनिक एकता ने विभिन्न रीति–रिवाजों एवं सांस्कृतिक व्यवहारों, संरचनाओं, भाषाओं और सामाजिक जीवन की रीतियों में विभिन्न स्वरूप ग्रहण किए। सभी में एक वृक्ष की भाँति एकता है।

किंतु राजनीतिक क्षैत्र में अभी भी इन्हें एक अर्थपूर्ण अभिव्यक्ति की तलाश है। विरासत में प्राप्त इस दार्शनिक सामाजिक प्रणाली और वेस्टमिस्टर प्रारूप पर आधारित राजनीतिक प्रणाली के आपसी मतभेद भारत की एक महत्त्वपूर्ण, राजनीतिक समस्या है। मूल रूप से प्रागैतिहासिक काल में है यद्यपी यह, विभिन्न लोगों एवं विभिन्न माध्यमों द्वारा, संजीव एवं शक्तिशाली की, रहती है वे समाज अन्धों प्रतीकों, मिथकों, एवं भाषाओं के साझेदार रहे है।

वैदिक विश्व दृष्टि, उपनिषद दर्शन, बौद्ध दर्शन, सिख और इस्लाम की धार्मिक परम्पराएँ इस आत्ममातीकरण के बाद की गतिविधियाँ है।

प्रचलित धारणा है कि भारतीय राजनीतिक चिन्तन में, सत्तात्मकता का अभाव पाया जाता है –

कर्म–कर्त्तव्य, जाति, ब्रह्मण्डीय प्रक्रिया और यहाँ, तक कि, ''न्याय'' और, राज्य के बारे विचारों, के विकास में, उल्लेखनीय प्राप्ति सात्मकता है। इस्लाम और इसाई पाश्चात्य संस्कृति का भारत में प्रवेश हुआ, तब इसके परिणामस्वरूप इस सातत्यता में टूटन दिखाई दी, कितू इन कालों में भी प्रारम्भिक विचारों को इस्लाम से संबंध करने के प्रयास हुए ताकि इस खाई को, पाटकर, पुराणों सूकों, को एक नए रूप में खोज सके।

मध्यकाल में हिंदू राजनीतिक चिन्तन में एक शिथिलता थी, किन्तु इसके, कुछ विचारों को अबुल फजल जैसे व्यक्तियों ने आत्मसात् किया, एक अर्थ में तुलसीदास के रामचरितमानस'' जैसे कुछ, एक महाकाव्यों द्वारा प्रभावी परम्परा को, संरक्षित करने का प्रयास किया, मध्यकाल में, बहुत ही कम राजनीतिक कल्पना थी, इस अर्थ, में वास्तव में निरंतरता का अभाव था, जैसे, जैसे, समयता, का विकास पनपा, राजनीति के विभिन्न स्वरूपों का उदय हुआ, मध्यकाल में राजनीति वास्तव में प्रतप्रायः थी, किंतू अग्रंजों के साथ एक नया, राजनीतिक विचार, उत्पन्न हुआ।

भारतीय राजनीतिक विचारकों के पास अपने पिश्चमी समकक्ष के मुकाबले अधिक मुश्किल जिम्मेदारी है सर्वप्रथम इन्हें प्रयुक्त होना चाहिए।

क्योंकि इन्हें पश्चिमी राजनीतिक विचारधरा के साथ–साथ एशिया के विचारधारा का, इतिहास जानने की भी जरूरत है –

ए. अप्पादोराई पर समीक्षा लेख बीसवी शताब्दी में भारतीय, राजनीतिक विचारधारा में यूनिवर्सिटी ऑफ लंदन की इंस्टीट्यूट ऑफ, कॉमनवेल्थ स्टडीज के डब्ल्यू मॉरिस जॉन पश्चिमी शिक्षकों, की राजनीतिक विचारधारा की संकीर्णत पर सवाल उठाते है –

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 6,June 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वे बताते है कि भारतीय विचारकों, के योगदान को, बहुत अधिक ''प्रांसगिक'' हो जाएंगे, इनमे सबसे खास नाम, महात्मा गाँधी का नाम है।

जिन्होंने भारतीय और पश्चिमी परंपराओं की विचारधारा को एक कर दिया, या बहुत से, बहुत से भारतीय राजनीतिक विचारकों के लिए, संपुर्ण मानवताऔर सिर्फ भारतीय ही नहीं इनके श्रोता की तरह थे, इन्होंने सिर्फ, भारतीय मुश्किलों, बल्कि विश्व–इतिहास की समस्याओं, मुद्दों या सिद्धांतों का भी जिक्र किया– जैसे –जागीरदारी या सामंतवाद भौतिकवाद पुँजीवाद, साम्राज्यवाद, समानाधिकारवाद, विरोधी, सिद्धांत अवधारणा अपने, जीवन के हस्तिकोण, स्वतंत्रवाद राज्य रहे है, लोकतंत्र हिंसा अहिंसा पारिस्थितिकीय समस्याओं, नैतिकता, पर अपने विचार आधुकिन भारत के समय– भी हमारे विचारकों ने वैश्विक राजनीतिक समस्याओं को बीच का रास्ता बताया,

मनु की बह्मण्डीय व्यवस्था से लेकर, वाल्मीकी की एवं व्यास की नायकीय हस्तिः शुक्र एवं बृहस्पति की नैतिक दृष्टि, कौटिल्य की व्यावहारिक दृष्टि से महावीर, बुद्ध, से बर्नी एवं फजल, की साम्राज्यवादी दृष्टि तक जाता है।

बाद में पुनर्जमण के परिमाणास्वरूप जो आधुनिक चिंतन आया, अरंविद की सम्रग दृष्टि, गांधी का समन्यवाद रॉय और, नेहरू, लोहिया का मानवतावादी एक समाजवादी दृष्टिकोण रवीन्द्रनाथ टैगोर, की विश्व नागरिकता का योजनदान व रेखांकित करना चाहिए –

वे कारक जो राजनीतिक विचारों का प्रारंभ यूनान से आरंभ होना मानते है –

1. भौगोलिक स्थिति
2. जिज्ञासा वृत्ति – यूनान के लोग मूलतः जिज्ञासु वृत्ति के थे, मिश्र एवं क्रिट की उन्नत सभ्यताओं से संपर्क आने के कारण नई वस्तु खोज की प्रवृत्ति में रहते थे।
3. विवेक बुद्धि – यूनान के लोग चिंतन के साथ निष्कर्ष पर जाना जानते थे। ईश्वर अथवा प्रकृति पर भरोसा नहीं था। धर्म के प्रति कोई आकर्षण नहीं था।
4. व्यक्ति की महत्ता का ज्ञान
5. मानव मूल्यों का विकास
6. नगर राज्यों का विकास

अतः यह कारक यूनान को पूर्व के चिन्तन से अलग करते है।

प्राचीन भारतीय राजनीतिक दर्शन की भूमिका में भारत का योगदान

भूमिका

1. **प्राचीन भारत में राजनीति के आयाम :–** प्राचीन भारत में हमारे अध्ययन विषय को राजधर्म, दंडनीति, अर्थशास्त्र और और नीतिशास्त्र आदि नामों से संबोधित किया गया । राजधर्म – पाशचात्य

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 6,June 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जगत की तरह इसका कोई एक निश्चित नाम नहीं है महाभारत के 'शांतिपर्व' में इसे 'राजधर्म' कहा गया है। प्राचीन भारत में राजतंत्र ही सबसे अधिक प्रचलित था, अतः राज्य और शासन के अध्ययन को राजा का धर्म कहा गया राजधर्म में राजा के सभी कर्तव्य और शासन सम्बन्धी बाते सम्मिलित की गयी थी । दण्डनीति– इसे प्राचीन भारत में 'प्रशासन का शस्त्र' समझा गया जिसका सम्बन्ध शासन के कार्यों अथवा शासन तंत्र से रहा । कौटिल्य के मतानुसार मनु, बृहस्पति और शुक्राचार्य द्वारा मणि चार विधाओं में से दण्डनीति एक है । उसके मतानुसारा बल प्रयोग या दण्ड के बिना कोई राज्य कायम नहीं रखा जा सकता, दण्ड के सम्बन्ध मे मनु के कहना था कि कब सभी लोग सो रहे होते हैं तो दण्ड उनकी रक्षा कर्ता है। उसी के भय से लोग न्याय का मार्ग अपनाते हैं । अर्थशास्त्र – अर्थशास्त्र शब्द का प्रयोग प्रायः संपत्तिशास्त्र के लिए किया जाता है जिसका अध्ययन विषय धन व अर्थ की प्राप्ति के साधन तथा मनुष्य के हित में प्रयोग है । इसके विपरीत राज्यशास्त्र का अध्ययन विषय राज्य से शासन है अतएव दोनों में बड़ा अंतर है। कथन जैसे मनुष्य के व्यवसाय व धंधे दिग्दर्शन होते हैं वैसे ही जिस भूमि पर रहकर वे व्यवसाय वे चलते हैं वह भूमि भी संबोधित हो सकती है, इसलिए भूमि को प्राप्त करने व उसका पालन करने का जो साधन है, उसे भी अर्थशास्त्र कहना उचित है इस प्रकार इसे अर्थशास्त्र की भी संज्ञा दी गयी । नीतिशास्त्र – नीतिशास्त्र में नीति शब्द की 'नी' धातु का अर्थ 'ले जाना' होता है । जो शस्त्र भलाई बुराई में भेद करे तथा उचित अनुचित कार्यों का उल्लेख करे उसे 'नीतिशास्त्र' कहा जाता है । यह मार्गदर्शन मानव जीवन के किसी भी क्षेत्र में किया जा सकता है । राजनैतिक क्षेत्र में किए गए मार्गदर्शन के लिए भी नीतिशास्त्र शब्द का प्रयोग कर दिया जाता था। कामनदक तथा शुक्र के राज्य एवं शासन के सम्बन्ध में जो रचनाएँ की उनको नीतिशास्त्र का नाम दिया हाय कामनदक के सामी में जो 'नीति' शब्द राज्य की नीति के सम्बन्ध में प्रयुक्त किया जाता था वही अब सामान्य आचरण के लिए प्रयुक्त किया जाने लगा । सामान्य आचरण के नियमों को राजा के व्यवहार के नियमों से अलग करने के लिए 'राजनीति' शब्द का प्रयोग किया जाए। इसके बाद से 'राजनीति' शब्द का प्रयोग प्रचलित हुआ तथा इसी के अंतर्गत शासन एवं राज्य व्यवस्था से संबन्धित शासन एवं राज्य रचनाएँ कि जाने लाही ।

2. **राज्य का उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति है :–** प्राचीन राजनीतिक दर्शन का अध्यात्मिकता ही ओर झुकाव एक प्रमुख विशेषता है कि राज्य को 'मोक्ष' प्राप्ति का साधन माना गया है। राजनीति सिद्धांतो और राज्य व्यवस्था करते समय यह ध्यान में रखा गया है कि राज्य में चारों ओर सुख शांति और व्यवस्था सम्बन्ध हों क्योकि एसे वातावरण में ही आध्यात्मिक उन्नति हो सकती है। श्रुति, धर्म सूत्र, स्मृति, इतिहास, पुरम, नीतिशास्त्र के ग्रंथ, निबंध, बौध्य तथा जैन ग्रंथ आदि सभी के मनुष्य के जीवन का लक्ष्य मोक्ष्य की प्राप्ति बताया है। उसी को ध्यान में रखकर राजनीतिक सिद्धांतों का भी निर्धारण एवं रचना किया गया है। राज्य ही समाज में एसी व्यवस्था लागू करता है जो मनुष्य को मोक्ष कि ओर ले

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 6,June 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जाता है । यह बात शान्ति पूर्व, शुक्रनीति तथा कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी कही गयी है जैसे राज्य के द्वारा यज्ञ, देव पुजा, धार्मिक कार्य में आने वालो वस्तुओं पर कर न लगाना तथा सभी वर्गों से धर्म का पालन करना आदि, इन सभी बातों से स्पष्ट है कि 'राज्य' का लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति था

3. **धर्म और राजनीति के सम्बन्ध का एकरूपता :–** प्राचीन भारत में राजनीतिक सिद्धांतों का विकास धर्म के आने के रूप में हुआ। भारतीय विचार में सभी कुछ धर्म द्वारा प्रचलित है धर्म एक व्यापक शब्द है उसी कारण हिन्दू राजशास्त्र वेत्ताओं के राजनीति और धर्म एक एक दूसरे से पृथक नहीं किया। इसी कारण धर्मशास्त्र के ग्रन्थों में राज्य का या गया है विचार 'राजशास्त्र' मे नाम से किया गया है अर्थात राजा का और प्रजा का पारस्परिक धर्म, राज्यभिषेक की विधि, राजाओं द्वारा यज्ञ करना, पुरोहित की नियुक्ति, राजकुमारों के संस्कार आदि का वर्णन है । इन धार्मिक पुस्तकों में सिर्फ यही नहीं बताया गया है कि राजा और शासन को क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए अपितु मंत्रियों, पुरोहित, सेनापतियों, दूत, न्यायधीश, कर्मचारी और सैनिकों के कर्तव्यों प्रेरित का भी वर्णन है। कर्तव्य और धर्म समानार्थक है इस कारण भी राज्य सम्बन्धी विचार धर्म से प्रेरित है ।

इसी कारण प्राचीन भारत की राजनीति में नैतिकता का समावेश रहा और राज्यशास्त्र को नीतिशास्त्र कहकर पुकारा गया। धर्म का रक्षण राज्य का प्रमुख दायित्व था। धर्म और राजनीतिक विचार एक दूसरे से गुथे हुए हैं। राजनीति और धर्म के पारम्परिक घनिष्ठ संबंध का आभास इसी तथ्य से हो जाता है की जिन ग्रन्थों को प्राचीन भारतीय राजनीति के प्रमुख ग्रंथ माना जाता है वे धार्मिक दृष्टि से पर्याप्त महत्वपूर्ण हैं । वेद, उपनिषद, स्मृतियाँ, महाभारत, रामायण, पुराण आदि साहित्यिक ग्रन्थों का प्राचीन महत्व की राजनीति को समझने के लिए जितना महत्व हैं उससे भी अधिक महत्वपूर्ण इसको धार्मिक दृष्टि से माना जाता है । बौद्ध जातक एवं जैन धर्म के अनेक ग्रंथ धार्मिक दृष्टि से उपयोगी तथा सार्थक होने के साथ साथ उस समय की राजनैतिक संस्थाओं एवं विचारों का भी दिग्दर्शन कराते है

भारतीय राज्यशास्त्र के ग्रन्थों में राज्य व्यवस्था सम्बन्धी विचारों में समन्वयात्मकता एवं एकता है । पाश्चात्य राजनीतिक विचारों एवं शास्त्रकारों में जो मतभेद और एक दूसरे के विचारों का खण्डन एवं आलोचना दिखाई देता है वैसा भरितीय राजनीतिक ग्रन्थों में हमे दिखाई नहीं देता । विविध ग्रंथ एक से ही विचारों का प्रतिपादन करते हैं मोक्ष, त्रिगुण सिद्धांत, कर्मफल सिद्धांत, पुरुषार्थ, वर्णाश्रम व्यवस्था, आश्रम व्यवस्था आदि विचारों में मात्रात्मक अंतर है गुणात्मक नहीं, किसी ग्रंथ मे कम वर्णक तो किसी में अधिक इसी प्रकार राज्यभिषेक, राजा के दैनिक कार्य, राज्यपद की उत्पत्ति, राज्य के तत्व, अंतर राज्य सम्बंध आदि राजनीति विचारों के क्षेत्र में भी मनु, याज्ञवल्क और कौटिल्य इन सब में विस्तारपूर्वक विचार करने पर समानता ही दिखाई देगी।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 6,June 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

4. **भारतीय राजनीतिक दर्शन एवं सामाजिक विषयों में समन्वय :–** प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में विचारों की एकात्मकता कारण राज्य, राजा, समाज, व्यवस्था, संस्थान, मनुष्य सभी का निर्माता ईश्वर (ब्रह्मा) है। राज्य एवं राजा की उत्पत्ति का दैवी सिद्धांत मोक्ष की प्राप्ति राज्य का लक्ष्य होना सांसरिक जीवन में पारलौकिक में आध्यात्मिक एवं नैतिक आचरण धर्मशास्त्रों के नियमों का समाज में पालक ऐसे सनातन विचार हैं । जिसे सामाजिक व्यवस्था एवं राजनीतिक व्यवस्था दोनों में ही समान मान्यता दी गयी है ।

5. **राज्य एक नैतिक एवं सद्उपयोगी संस्था है :–**प्राचीन राजनीतिक विचारकों ने इस बात का समर्थन किया है कि राज्य का होना सामाजिक जीवन में अत्यंत आवश्यक एवं उपयोगी है। जीवन मे तीनों लक्ष्यों धर्म, अर्थ और कर्म कि राज्य के बिना प्राप्ति संभव नहीं हो सकती ऐसा माना गया है। भारतीय विचार में राज्य व्यवस्था के महत्व का निरूपण करते हुए माना गया है कि जब राज्य व्यवस्था नष्ट हो जाती है तो समाज बिखर जाता है उसमें 'मत्स्य न्याय' फैल जाता है अर्थात एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति का शोषण होने लगता है । राज्य ने ही समाज को बंधे रखा है इस कारण धर्मशास्त्र में भी एक अंग के रूप में राज्यधर्म का वर्णन किया जाता है अतः हम कह सकते हैं कि समाज में राज्य के महत्व को सभी प्राचीन ऋषिमुनियों, महर्षियों एवं विद्वानों ने स्वीकार किया है । दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि प्राचीन भारत में व्यक्तिवादी और अराजकतावादी विचारों का अभाव रहा । अराजक्तावादियों के अनुसार राज्य अनावश्यक और अनुपयोगी और व्यक्तिवादी राज्य को आवश्यक बुराई मानते हैं। उनके विपरीत प्राचीन भारतीय रजनीतिशास्त्री राज्य का विष्टरित कार्य क्षेत्र मानते थे, जो आज के लोककल्याणकारी राज्य से बहुत साम्य रखता है।

6. **राजनीतिक दर्शन व्यक्ति ने नहीं बल्कि परमात्मा ने चुनी है :–** प्राचीन राजनीतिक विचारों को ईश्वर द्वारा रचित माना गया है। इसका यह अर्थ नहीं कि राजा, राज्य, दण्ड, नीतिशास्त्र एवं राजनीति परमात्मा द्वारा निर्मित है इसका यह अर्थ बिल्कुल नहीं है कि परमात्मा ने स्वयं आकर पृथ्वी पर इनकी रचना की परंतु इसका इतना ही अर्थ है यह सब समाज के लिए लाभप्रद है तथा जिसने भी इनकी रचना की होगी उनमें परमात्मा तत्व रहा होगा तथा उसके लिए उन्हें परमात्मा से प्रेरणा प्राप्त हुई होगी।

पाश्चात्य राजनीतिक दर्शनिकों में राज्य के ध्येयों के बारे में विभिन्न धारणाए प्रचलित हैं जबकि प्राचीन भारतीय राजनीतिक दर्शनिकों के मतों में राज्य के ध्येय के बारे में भी सहमति आयी जाती है। सभी प्राचीन विचारक यह मानते हैं कि राज्य का प्रथम कर्तव्य धर्म का पालन करना है। धर्म में व्यक्ति का अपना धर्म, वर्ण धर्म और आश्रम धर्म सभी आ जाते हैं। कौटिल्य के अनुसार राजा के लिए यह आदेश था कि वह व्यक्तियों को अपने अपने धर्म से विचलित न होने दे सभी प्राचीन लेखकों के अनुसार राज्य का कर्तव्य न्याय का प्राशसन करना है और राज्य को अपनी प्रजा कि रक्ष

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 6,June 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

करनी चाहिए । रहा के लिए बहुधा यह उपदेश है कि वह अपनी प्रजा के प्रति पिता तुल्यव्यवहार करे राज्य व शासन के ध्येयों के प्रति एकमत होने का परिणाम यह रहा है कि राज्य के कार्यक्षेत्र के बारे में पाश्चात्य जगत की भाति प्राचीन भारत में विभिन्न बाद उत्पन्न नहीं हुए।

7. **प्राचीन भारत के राज दर्शन में राजतंत्र की भूमिका :–** भारतीय राजनीतिक विचार मुख्य रीति से राजतंत्र का विचार है । राजनीति का वर्णन करने वाली सभी भारतीय ग्रंथ राज्य व्यवस्था का केंद्र बिन्दु राजा को मानकर तदनुसार सम्पूर्ण विचार करते हैं तथा इसलिए राज्य सप्तांगो में भी सर्वप्रमुख अंग राजा ही बताया गया है। राज्य की उत्पत्ति का भी विचार राजा की सर्वप्रथम नियुक्ति के रूप में बताया गया है। भारतीय विचार में राजतंत्र की दृष्टि से सम्पूर्ण विवेचन है यूनान के समान यहा गणतन्त्र तथा कुलीनतंत्र का विवेचन लगभग नहीं है। महाभारत के दो अध्यायों में तथा कौटिल्य अर्थशास्त्र के एक अध्याय में तथा बौद्ध, जैन ग्रन्थों में 'गण' अथवा 'सघ' के नाम से इन राजपद्दतियों का कुछ विवेचन है किन्तु प्रमुख रूप से राजतंत्र का ही वर्णन है।

8. **राजा का स्थान नैतिक और ऊँच से :–** प्राचीन भारतीय राजशास्त्र की एक अन्य विशेषता राजा जे पद को अत्यधिक उचा स्थान प्रदान किया जात है। प्रायः सभी लेखाओं के राजपद को दैवी माना है और राजा के दैवी गुणों का समावेश किया है एक प्रकार से राज्य का सार ही राजा होता था। कौटिल्य ने राजा और राज्य के बीच कोई अंतर नहीं किया। कालिदास ने भी कहा है 'विश्व के प्रशासन का कार्यभार खुद सृष्टिकर्ता ने राजा के कंधों पर रखा है'। यदि राज्य में कोई कमी रहती है तो उसके लिए राजा दोषी है। राजा को रात और दिन हर समय कार्य करना पड़ता है। इस सम्बंध में महत्वपूर्ण बात यह है कि राजा को अत्यधिक ऊंचा स्थान देते हुए भी उसे निरंकुशता की स्थिति प्रदान नहीं की गयी है। राजा पर सबसे प्रमुख रूप से धर्म का प्रतिबंध है और वह मंत्रिपरिषद कि सलाह लेने के लिए भी बाध्य है।

9. **प्राचीन भारत के राज दर्शन में यूनान की तरह विशाल साम्राज्य नहीं छोटे–छोटे राज्यों का अस्तित्व था –** भारतीय राजनीतिक विचार यह मानकर चलता है अथवा विभाजित है । इसलिए अंतर्राज्य सम्बन्धों के विचार में विजिगीषु (विजय की इच्छा रखने वाला) को केंद्र मानकर सम्पूर्ण विचार है, जो एक विशेष क्षेत्र पर शासन करता हुआ राजनीति का इस प्रकार संचालन करेगा कि वह सम्पूर्ण भारत अथवा पृथ्वी पर प्रभुत्व स्थापित कर ले । चक्रवर्तित्व का, सर्वभौम राज्य का वर्णन भी इसी दृष्टि से है तथा अश्वमेध यज्ञ का किया जाना भी इस बात को प्रसिद्ध करता है कि विजिगीषु राजा अन्य राजाओं को अपनी शक्ति से पराभूत करता हुआ उन्हें अपने अधीन कर लेगा। भारतीय राजनीतिक विचार का आधार एक ऐसा राज्य है जो बहुत बड़ा नहीं है परंतु जिसका शासक अन्य राजाओं को अपने अधीन करने के लिए प्रयत्नशील है अर्थात भारतीय राजनीतिक विचार छोटे राज्यों

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 6,June 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

का विचार है। भारतीय राजनीतिक विचार बहुत से छोटे छोटे राज्यों का विचार होने के कारण तथा भारतीय विचार में एक एकात्मक राज्य का अस्तित्व भर की एकता का आधार नहीं बताया गया है।

10. भारतीय राजदर्शन आदर्शवादी, नैतिक व कर्म प्रथान था :– भारतीय राजदर्शन में आदर्श राज्य संबंधी काल्पनिक रचनाओं का सर्वथा अभाव है हिस प्रकार पाश्चात्य जगत में प्लेटो का 'रिपब्लिक' और सर टौमस मूर का 'यूटोपिया' है वैसे ग्रंथ प्राचीन भारत में किसी ने नहीं लिखे । इसी आधार पर यह कहना उचित होगा कि प्राचीन भारत की रचनाओं का दृष्टिकोण व्यावहारिक था कोरा सैद्धांतिक या काल्पनिक नहीं ए० के० सेन ने लिखा है ''हिन्दू राजनीतिक चिंतन उत्कृष्ट वास्तविकता से भरा पड़ा है और कुछ राजनीतिक अपवादों को छोड़ कर भारतीय राजनीतिक विचारों का सम्बंध राज्य के सिधान्त और दर्शन से उतना नहीं है जितना राज्य की स्थूल समस्याओं से है ।''

भारतीय राजनीतिक विचार व्यवहार पर आधारित है जिसे रही की आवश्यकता और महत्व (अराजकता के वर्णन द्वारा विभिन्न देवताओं के वर्णन के समय) राज्य व्यवस्था और समाज जीवन का सम्बंध, कर के सिद्धांत, दंड के सिद्धांत, न्याय का सिद्धांत स्मृतियों में अथवा नीतिशास्त्र के ग्रन्थों में पाये जाते हैं परंतु भारतोय विचार में मुख्य रीति से राजनीतिक तथा राज्य व्यवस्था का व्यावहारिक विवेचन है। उदाहरण स्वरूप राज्य के सप्तांगो का विचार पूर्ण रीति से व्यावहारिक ढंग से किया गया है और कारण उसमें सेना, कोश तथा मित्र को भी रही का अंग बताया गया है अथवा विभिन्न राज्यों के पारस्परिक सम्बन्धों के विषय में मण्डल का विचार, षाडगुणा का विचार (संधि, विग्रह आदि) तथा एसबी विचार व्यावहारिक ढंग से किए गए हैं। राजनीति सम्बन्धी अधिकांश भारतीय सिद्धांतों को इन्ही व्यावहारिक विचारों में से खोज कर निकाला जा सकता है ।

11. दंडनीति का महत्व :–भारतीय दर्शन मानवीय जीवन में आसुरी प्रवित्तियों की प्रबलता को स्वीकार करते हैं और इसी कारण उनके द्वारा दण्ड की शक्ति को बहुत अधिक महत्व दिया गया है। राजनीति में दण्ड के महत्व का अनुमान इसी तथ्य से लगाया करते हुए अन्य सभी विद्यामकरण उनके लेखकों के बदडती है। कम नुको कथन के अनुसार दण्ड ही शासन है।

12. विचारों की अपेक्षा संस्थाओं पर विशेष बल :– हिन्दू राजनीति के रचनाकारों ने अनेक अध्ययन का केंद्र बिन्दु राजनैतिक संस्थाओं को बनाया है इन संस्थाओं का महत्व, संगठन तथा कार्य आदि का विषाद रूप से वर्णन किया गाया है। इनके राजनैतिक मान्यताओं तथा सिद्धांतों का वर्णन केवल प्रासंगिग रूप से किया गया है रूप से राजनीतिक संगठनों तथा उनके समस्त अध्ययन को केंद्र बिन्दु मूल रूप से राजनीतिक संगठनों तथा उनके कार्यों को बनाया गया है।

संदर्भ सूची

1. प्रो. सुव्रत मुखर्जी, डॉ. सुशीला रामा स्वामी : हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन

2. वी.आर. मेहता : भारतीय राजनीतिक चिंतन के आधार, प्रस्तावना पेज 10–17
3. ऋग्वेद X: 129, 7 उद्धृत एवं अनुवादित, ए.सी. बोस, हिंग्स फ्राम वेदाज
4. W.H. Morris Jones : parochialism in political thought, political studies, vol. 20, no. 4, dec 1972
5. थामस पचम केनेथ एल डायस : आधुनिक भारत में राजनीति विचार Sage Publication, India pvt. ltd.